International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 152-154

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 152-154
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-03-2017
Accepted: 27-04-2017

डा॰ मीतू गौड़
सहायक प्रोफेसर (अतिथि), संस्कृत विभाग,
सत्यवती महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Correspondence
डा॰ मीतू गौड़
सहायक प्रोफेसर (अतिथि), संस्कृत विभाग,
सत्यवती महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

अमलकीर्ति योग

डा॰ मीतू गौड़

प्रस्तावना

योग अत्यन्त व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण संकल्पना है । योग की व्याख्या विषयों के अनुरूप विविध रूपों में होती रही है । योग शब्द दर्शन-शास्त्र से सामान्य धरातल तक, शास्त्रों की गूढ़ता से ज्योतिषशास्त्र की सूक्ष्मता तक स्वयं को व्याख्यायित करता रहा है । 'युज्' धातु में घञ प्रत्यय लगकर और कुत्व होकर निष्पन्न 'योग' शब्द के अर्थ हैं - जोड़ना, मिलाप, संपर्क, योजना, परिश्रम, सम्बन्ध, निर्वचन, मन का संकेन्द्रियकरण, परमात्मचिन्तन आदि ।[1] अमरसिंह [2] ने 'योग' शब्द के कवच, उपाय, ध्यान, संगति तथा युक्ति अर्थ बताए हैं । एल०आर० वैद्य [3] ने योग के आङ्ग्ल पर्याय - connection, yoke, mixture, religious and abstract meditation, principal star in a lunar mansion, violator truth, rule etc. कहे हैं ।

ज्योतिषशास्त्र में भी योग, युगल, युग्म, युति आदि विविध शब्दों का प्रयोग प्राप्त होता है जिनका अभिप्राय है ज्योतिषशास्त्र के विविध अवयवों में से एक से अधिक तत्त्वों की संयुक्ति । ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत तत्त्व हैं - ग्रह, राशि तथा भाव । इनमें से किन्हीं दो अथवा दो से अधिक तत्त्वों की संयुक्ति योग का निर्माण करती है । भारतीय ज्योतिषशास्त्र की गणित शाखा में उल्लिखित योग पञ्चाङ्ग के पाँच अङ्गों - तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण में से एक अङ्ग को कहा गया है । [4] वहीं फलित ज्योतिषशास्त्र के सन्दर्भ में यह शब्द ग्रह-राशि एवं भाव के आपसी सम्बन्ध से बनने वाले अनेकानेक योगों का द्योतक है जिनका आकलन एवं विश्लेषण ज्योतिषीय फलादेश में विचारणीय होता है ।

ज्योतिष की फलित शाखा के अन्तर्गत नव ग्रहों, द्वादश राशियों तथा द्वादश भावों के पारस्परिक सम्बन्ध से अनेकानेक योग निर्मित होते हैं । इन योगों में से कुछ योग ग्रह एवं भाव के सम्बन्ध से, कुछ योग ग्रह, राशि एवं भाव के सम्बन्ध से, कुछ योग भावेश, भाव, राशि आदि के सम्बन्ध से निर्मित होते हैं ।

जन्मकुण्डली में सूर्यादि नव ग्रह लग्नादि द्वादश भावों में स्थान प्राप्त करते हैं । सूर्यादि नव ग्रहों में से जब कोई एक अथवा एक से अधिक ग्रह द्वादश भावों में एकल अथवा किसी अन्य ग्रह के साथ संयुक्त होकर स्थिति प्राप्त करते हैं तब विविध योग निर्मित होते हैं । ये योग मुख्य रूपेण ग्रह एवं भाव पर आधारित होते हैं । ग्रह एवं भाव के सम्बन्ध से बनने वाला एक प्रमुख योग है - अमलकीर्ति योग ।

अमलकीर्ति योग

अमलकीर्ति योग ग्रह एवं भाव विशेष के संयोजन से बनने वाला एक विशिष्ट योग है जिसे अमलकीर्ति [5], अमला [6] अथवा अमल [7] आदि विविध नामों से जाना जाता है ।

योगलक्षण

अमलकीर्ति योग में कुण्डली के लग्न भाव अथवा चन्द्र स्थित भाव, लग्न अथवा चन्द्र से दशम भाव तथा शुभ ग्रहों की भूमिका होती है। विद्वतजनों के अनुसार यदि किसी कुण्डली में लग्न (प्रथम) भाव अथवा

चन्द्रमा से दशम भाव में केवल शुभग्रह स्थित हों तो अमलकीर्ति योग [8] बनता है किन्तु इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि पडुमनाई चोमाद्रि ने अपने ग्रन्थ जातकादेशमार्ग में यस्य जन्मसमये शशि लग्नात्सद्ग्रहो भवति' [9] कहकर अमला योग के अन्तर्गत केवल चन्द्र स्थित भाव से दशम भाव में शुभ ग्रह होने का वर्णन किया है ।

इस विषय में मेरा यह मत है कि किसी कुण्डली के लग्न अथवा चन्द्र स्थित भाव से दशम भाव में स्थित शुभ ग्रह यदि शुभ भावों का स्वामी हो, अन्य शुभ भावेशों से दृष्ट हो अथवा युत हो, दीप्तादि शुभ अवस्था में हो, शुभ कर्तरि में हो, किसी अशुभ प्रभाव में नही हो, तो ऐसी स्थिति में वह शुभता के साथ-साथ बल का सृजन भी करता है । ऐसे शुभ ग्रह के द्वारा बनने वाला अमलकीर्ति योग अधिक प्रभावी होता है एवं जातक को इस योग से सम्बन्धित श्रेष्ठतम फल प्राप्त होते हैं ।

इसके विपरीत यदि यही शुभ ग्रह क्रूर भाव-भावेशों से सम्बन्ध रखता हो, पाप कर्तरि में हो, पाप प्रभाव में हो, शुभ प्रभाव से हीन हो, तो उसकी शुभफलप्रदायकता क्षमता में ह्रास होता है । तथा ऐसा ग्रह शुभ होने पर भी प्रभावशाली अमल योग नही बनाता, जिसके कारण जातक को इस योग से सम्बन्धित शुभ फलों का प्राप्ति बाधित होती है।

इस प्रकार किसी कुण्डली के दशम भाव में किसी शुभ ग्रह के स्थित होने पर अमलकीर्ति योग का नि श्चय करने से पहले कुण्डली के अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन कर लेना चाहिए ।

योगफल

अमलकीर्ति योग 'अमल' अथवा 'अमला' शब्द से बना है । अमल का अर्थ है - मलरहित, पवित्र, निष्कलङ्क जबकि अमला लक्ष्मी का पर्याय है । [10] जिस प्रकार अमल अथवा अमला शब्द पवित्रता, सात्विकता, शुभता के द्योतक हैं, उसी प्रकार अमलकीर्ति योग भी शुभ ग्रहों एवं शुभ भावों के समन्वय से बनने वाला एक शुभ योग है । शुभ ग्रह जीवन में शुभता, यश, प्रसिद्धि, धन, वैभव आदि देने में सक्षम होते हैं तथा केन्द्र भाव भी क्रमशः शारीरिक सौष्ठव, घर, जीवनसाथी तथा व्यवसाय के माध्यम से जीवन में शुभाशुभ को अभिव्यक्त करते हैं । सबलतम केन्द्र - 'दशम भाव' कर्म के माध्यम से जीवन में प्राप्तियों का द्योतक है । इन दोनों अर्थात् शुभ ग्रह तथा शुभ भाव का समन्वय एवं सम्बन्ध एक शुभकारी संयुक्ति का निर्माण करता है जिसे अमलकीर्ति योग कहा जाता है । अमलकीर्ति योग जातक को सात्विक वृत्ति प्रदान कर उसे यशस्वी, धनवान् एवं कीर्तिवान् बनाता है । अतः पराशर, वैद्यनाथ आदि आचार्यों के अनुसार अमलकीर्ति योग में उत्पन्न जातक राजमान्य, भोगी, दानी, बन्धुओं का प्रिय, परोपकारी, धर्मात्मा तथा गुणी होता है । [11] इस योग में उत्पन्न मनुष्य का नाम चाँद-तारों के अस्तित्व में रहने तक जाना जाता है अर्थात् वह अमरकीर्ति वाला होता है । बैंगलोर वेंकट रमन [12] के अनुसार ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध होता है तथा उसका चरित्र निष्कलंक होता है एवं वह सुसम्पन्न जीवन व्यतीत करता है । लग्न अथवा चन्द्रमा से दशमस्थ शुभ ग्रह धन एवं प्रतिष्ठा कारक होते हैं । अतः इस योग का जातक यशस्वी होता है तथा आजीवन धनी रहता है। [13] मन्त्रे श्वर [14] ने इस योग के कुछ अन्य फल भी बताए हैं। उनके मतानुसार अमलकीर्ति योग में जन्म लेने वाला जातक भूमि का स्वामी, धनी, नीतिज्ञ, पुत्र तथा सम्पत्ति से युक्त तथा यशस्वी होता है।

अतएव स्पष्ट है कि अमलकीर्ति एक शुभ योग है जो जातक को अपने नामानुरूप अनन्त काल तक धन, यश, वैभव एवं सुख-समृद्धि प्रदान करता है।

उदाहरण [15] -

जन्म दिनाङ्क - 28.12.1932 जन्म समय - 6.37 (प्रातः)

अक्षांश - 20^0 53' उत्तर रेखांश - 70^0 28' पूर्व

जन्म स्थान - वेरावल (Veraval)

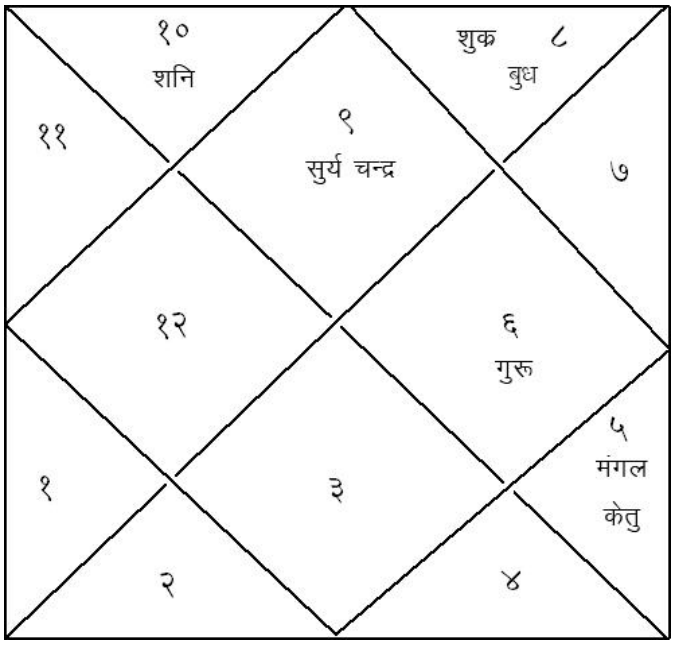

अमलकीर्ति योग

प्रस्तुत कुण्डली भारत के एक प्रसिद्ध उद्योगपति धीरूभाई अम्बानी की है, जहाँ शुभ ग्रह 'गुरु' लग्न एवं चन्द्र दोनों से दशमस्थ होकर अमलकीर्ति योग बना रहा है । धनु लग्न की इस कुण्डली में लग्न एवं चन्द्र से दशमस्थ गुरु ग्रह दो शुभ (केन्द्र - लग्न एवं चतुर्थ) भावों का अधिपति है तथा किसी भी अन्य (क्रूर) ग्रह से अप्रभावित है । फलतः श्रेष्ठ स्तर का अमलकीर्ति योग निर्मित हो रहा है ।

धीरूभाई अम्बानी ने 1966 में रिलायन्स उद्योग की स्थापना की । अपने कार्यकाल में इन्होंने व्यवसाय को विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित ही नही किया, अपितु उन्नति के शिखर पर पहुँचाया । उनके व्यवसायिक क्षेत्रों में पेट्रोरसायन, दूरसंचार, सूचना प्रोद्योगिकी, ऊर्जा, बिजली, फुटकर व्यवसाय, वस्त्र, मूलभूत सुविधाओं की सेवा, पूंजी बाजार और प्रचालन-तन्त्र रहे ।

अम्बानी एक धनी, दानी, परोपकारी, बन्धुओं के प्रिय, धर्मात्मा तथा गुणी व्यक्ति हुए जिन्होंने अपने जीवन में उद्यम एवं कर्म से अपार धन, यश, वैभव, सुख-समृद्धि प्राप्त करते हुए एक सुसम्पन्न जीवन व्यतीत किया तथा अमलकीर्ति अर्जित की । उद्योग के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान के लिए 2016 में भारत सरकार ने इन्हें पद्म विभूषण सम्मान भी प्रदान किया ।

अमलकीर्ति योग की शुभता स्वतः सिद्ध है।

संदर्भ सूची

1. आप्टे, वामन शिवराम – संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 839
2. योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु
   – अमरसिंह, अमरकोषः – तृतीयं काण्डम्, 3/27 ।
3. Vaidya, L.R. – The Standard Sanskrit – English Dictionary, pp. 599-600
4. तिथिर्वासरनक्षत्रे योगः करणमेव च
   इति पञ्चाङ्गमाख्यातं व्रतपर्वनिदर्शकम्।
   – ओझा, मीठालाल हिंमतराम – भारतीय कुण्डली विज्ञान, पृ० 1
5. (क) बृ०पा०हो० – 37/5 ।
   (ख) शास्त्री, नेमिचन्द्र – भारतीय ज्योतिष, पृ० 281 ।
6. जा०पा० – 7/119, फल० – 6/19 ।
7. रमन, बैंगलोर वेंकट, अनु० – अन्सारी जेङ, तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग, पृ० 24 ।
8. बृ०पा०हो० – 37/5, जा०पा० – 7/119, शास्त्री, नेमिचन्द्र – भारतीय ज्योतिष, पृ० 281; रमन, बैंगलोर वेंकट, अनु० – अन्सारी जेङ – तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग, पृ० 24 ।
9. जा०दे० – 8/15 ।
10. आप्टे, वामन शिवराम – संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 84 ।
11. बृ०पा०हो० – 37/6, जा०पा० – 7/120, शास्त्री, नेमिचन्द्र – भारतीय ज्योतिष, पृ० 281 ।
12. रमन, बैंगलोर वेंकट, अनु० – अन्सारी जेङ, तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग, पृ० 24।
13. जा०दे० – 8/15।
14. फल० – 6/20।
15. Shankar, Rajeshwari – The Times Select Horoscopes, p. 66।